नारायणदत्त श्रीमाली
ज्योतिष और
कालनिर्णय
५
४
३
२
६
७
१
१०
८
१२
९
११

प्रस्तुति :

डा० नारायणदत्त श्रीमाली

प्रकाशक : साधना पॉकेट बुक्स
39, यू० ए० बैंग्लो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 3966716, 2914161
मूल्य : 30/-
संस्करण : 2001
लेजर : सावत कम्प्यूटर्स, गांधी नगर, दिल्ली-110031
Printed at : Sudha Offset Press

ज्योतिष और कालनिर्णय : डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली Rs. 30/-

भूमिका

ज्योतिष और कालनिर्णय अपने आपमें एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें समय का सूक्ष्म विवेचन और क्षणांश को समझने का प्रयत्न किया गया है।

अभी तक इस प्रकार का ग्रंथ लुप्त और अप्रकाशित था और न इसका कोई लिखित विवरण मिलता है, सदियों से यह विद्या मौखिक परम्परा के रूप में गुरु शिष्य के द्वारा विकसित होती रही है, न तो इसे कभी सही रूप में समझने का प्रयत्न किया गया और न इसे व्यवस्थित रूप में लिखित रूप ही दिया गया। ऐसी स्थिति में यह ज्ञान साधारण पाठकों तक पहुंचाना तो कल्पना की ही बात थी।

मुझे जिस साधु से यह ज्ञान प्राप्त हुआ है उसने कितनी कठिनता से मुझे यह ज्ञान दिया है, उसे मैं ही जानता हूं। कितने महीनों तक मैं उसके पीछे-पीछे घूमा हूं, उसकी कितनी सेवा की है और किन-किन कठिनाइयों से उसकी इच्छा पूर्ति की है वह लिखने की बात नहीं। मेरी केवल एक इच्छा थी कि उससे यह ज्ञान प्राप्त करूं और सर्वसाधारण के लिए पुस्तकाकार में इसे सुलभ करूं जिससे आने वाली पीढ़ियां इस ज्ञान से वंचित न रहें।

मेरे जीवन का एक ही उद्देश्य बन गया है कि ज्योतिष तंत्र-मंत्र जैसे उच्च कोटि के ज्ञान को जन-साधारण के लिए सुलभ करूं, यह ज्ञान जो लुप्त होता जा रहा है, उसे खोजकर प्राप्त करूं चाहे इसके लिए मुझे कितना ही प्रयत्न करना पड़े, भूखा रहना पड़े, जंगलों में भटकना पड़े और उन साधुओं की सेवा करनी पड़े जिनके मस्तिष्क में इस प्रकार का ज्ञान कैद है, जो बाहर मुक्त वायु में आने के लिए छटपटा रहा है, पर उस कालकोठरी से मुक्त होना संभव नहीं हो रहा है। चाहे इस कार्य के लिए मेरा बलिदान भी हो जाए तो मुझे हिचकिचाहट नहीं होगी। केवल एक ही इच्छा है इस प्रकार के ज्ञान को उस मस्तिष्क रूपी कालकोठरी से मुक्त कर स्वतंत्र

वातावरण में स्थापित कर सकूं। सर्व-साधारण के लिए उपलब्ध कर सकूं और आने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर के रूप में कुछ छोड़कर जा सकूं।

मेरे द्वारा पाठकों को हमेशा कुछ नया ही प्राप्त हुआ है, और मुझे विश्वास है कि मेरा यह प्रयास भी उनके लिए हितकारक व उपयोगी सिद्ध होगा।

—नारायणदत्त श्रीमाली

हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राजस्थान)
दूरभाष : 22209

प्रवेश

समय का चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। आज तक संसार में जितने भी महाबलि, विद्वान्, योगी, तांत्रिक और मंत्र शास्त्री पैदा हुए हैं उन सभी ने काल को बांधने की चेष्टा की है परन्तु अपने इस उद्देश्य में कोई भी व्यक्ति पूर्णतः सफल नहीं हो पाया है।

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें तो प्रत्येक क्षण की अपने आप में एक अलग सत्ता है, अपने आप में एक अलग व्यक्तित्व है। जब तक हम उस क्षण के महत्व को या उस क्षण के व्यक्तित्व को नहीं पहचान सकेंगे तब तक समय का मूल्य भी हमारे लिए व्यर्थ रहेगा।

रावण एक तरफ जहाँ लंका का राजा था उसके क्रोध से भूमंडल कांपता था वहीं उसने तंत्र के माध्यम से कुछ ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली थीं जिसकी वजह से यह आकाश में मुक्त रूप से विचरण कर सकता था। वायु, इन्द्र आदि को मन चाहे तरीके से उपयोग कर सकता था परन्तु उसने भी अन्त में काल के चक्र को मन-ही-मन प्रणाम करते हुए कहा है कि मैं सब कुछ करने में समर्थ हो सका हूं परन्तु समय के मूल्य को, क्षण के महत्व को नहीं पहचान सका। इसीलिए मैं आज इस स्थिति में आने के लिए मजबूर हुआ हूं।

राम रावण युद्ध समाप्त हो चुका है। युद्ध स्थल में रावण गिरा हुआ है, उसके चारों ओर उसके सम्बन्धी परिजन, मंत्री और अन्य दास दासियां हाथ बांधे खड़े हैं और वह उस क्षण का इन्तजार कर रहा है जबकि वह इस प्रकार नश्वर शरीर को छोड़कर अन्य लोक में विचरण करने के लिए प्रस्थान करे।

उसी समय उधर श्री राम ने जब देखा कि इस युद्ध में विजय होने से लक्ष्मण के दिमाग में कुछ गर्व-सा आ गया है तो उन्होंने लक्ष्मण को समझाते हुए कहा कि यह देवताओं की हमारे ऊपर असीम कृपा है जिसकी वजह से आज हम इस युद्ध में विजयी हो सके हैं परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम रावण से ज्यादा बलि हैं या ज्यादा चतुर हैं। सही रूप में देखा जाय तो

रावण के समान विद्वान इस समय पूरी पृथ्वी पर कोई नहीं है। यह बात भी स्पष्ट है कि वह मंत्र और तंत्र के क्षेत्र में अविजित है। उसने प्राकृतिक साधनों को इस प्रकार से अपने पक्ष में कर लिया है जिसकी सामान्य जन इस बात की कल्पना ही नहीं कर सकता। वह अपनी लंका पर जब चाहे वर्षा करा सकता है, जितनी चाहे वर्षा कराने में समर्थ है, पर्वत को इधर से उधर हटा सकता है, वायु के वेग को अपनी सामर्थ से रोक सकता है और मुक्त मन से स्वतन्त्र रूप से अपने आपको आकाश में विचरण के लिए छोड़ सकता है। निःसंदेह इस भूमंडल पर प्राकृतिक शक्तियों को जिस प्रकार से रावण ने नियन्त्रित कर रखा है उस प्रकार से अन्य कोई व्यक्ति नहीं कर सका। और इसीलिए रावण इस पृथ्वी का इस समय का सर्वाधिक बलि, विद्वान् और योग्य व्यक्ति है।

इससे भी बड़ी बात यह है कि समय की गणना का उसे पूरा-पूरा ज्ञान है। समय का ज्ञान अपने आप में एक अद्भुत और दुर्लभ विद्या है जिसका ज्ञान बहुत ही कम लोगों को इस समय प्राप्त है। इसलिए मेरी उचित राय है कि तुम रावण के पास जाओ और उससे काल ज्ञान के बारे में यदि कुछ जानकारी मिल सके तो प्राप्त करो अन्यथा यह सम्भव है कि यह दुर्लभ विद्या रावण के साथ ही हमेशा के लिए पृथ्वी पर लोप हो जाएगी।

लक्ष्मण अनमने मन से राम की आज्ञा को स्वीकर कर रावण के पास गये। लक्ष्मण ने देखा कि रावण पृथ्वी पर पड़ा हुआ है। उसके चारों तरफ उसके संबंधी, मन्त्री और अन्य कर्मचारी हाथ बंधे खड़े हैं। एक तरफ उसकी रानियां डबडबाई आंखों से उसके बुझते हुए शरीर को देख रही हैं परन्तु इतने घाव लगने पर भी रावण के चेहरे मर मुस्काराहट है, क्षोभ, चिन्ता, भय या विषाद की एक भी रेखा उसके चेहरे पर नहीं है।

लक्ष्मण फिर भी अपने मन में विजयी भाव लिए हुए रावण के पास जाकर खड़ा हो गया और अपने आपको क्षत्रिय समझकर ब्राह्मण रावण को प्रणाम करता हुआ बोला कि मुझे भाई राम ने आपके पास कुछ शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा है और मैं इस दुर्लभ ज्ञान 'काल ज्ञान' को जानने के लिए आया हूं।

रावण चुप रहा। न तो उसको आशीर्वाद दिया और न उसने अपने मुंह से एक भी शब्द निकाला।

कुछ समय तक लक्ष्मण चुपचाप खड़े रहे और रावण के उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे परन्तु जब काफी समय बीतने पर रावण ने कोई जवाब नहीं दिया तो मन में रोष लिए तेज-तेज कदमों से लक्ष्मण पुनः अपने शिविर की ओर लौट गए।

राम ने लक्ष्मण को दूर से ही देखकर समझ लिया कि लक्ष्मण खाली हाथ आया है परन्तु फिर भी पास आने पर जब राम ने पूछा कि वहां से क्या प्राप्त कर सके हो तो लक्ष्मण उबल पड़े। बोले, आपने व्यर्थ ही मेरा अपमान करा दिया। एक हारे हुए व्यक्ति के पास मेरा जाना कोई अर्थ नहीं रखता। मैंने तो क्षत्रिय कुल की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उसे यथोचित रीति से प्रणाम भी किया था और अपने आने का उद्देश्य भी बताया था परन्तु रावण मुझे देखकर अनजाना-सा बना रहा। उसने न तो मेरे प्रणाम का कोई उत्तर ही दिया और न मुझसे बातचीत करना ही उचित समझा। मुझे ऐसा लगता है कि हार की तिलमिलाहट से उसके मन में कुण्ठाएं व्याप्त हो गयीं।

राम हंसे और बोले, रावण इतना मूर्ख और असभ्य नहीं है कि वह तुम्हारे प्रणाम का उत्तर न दे और वह ज्ञान के जिस स्तर तक है वहां पर हार जीत का कोई भेद नहीं है। न तो हार की तिलमिलाहट उसके दिल में है और न उसके मन में किसी प्रकार का कोई क्षोभ या विषाद ही है। तुम वहां पर एक विजयी के रूप में नहीं गए थे अपितु एक शिष्य के रूप में उसके पास गए थे। तुम बतओ कि जब तुम रावण के पास गए तब किस स्थान पर खड़े होकर उसे प्रणाम किया।

लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि मैं उसके सिराहने खड़ा था और उसके मुंह के पास ही खड़ा रहकर प्रणाम किया था और ज्ञान प्राप्त करने की याचना प्रगट की थी।

राम ने उत्तर दिया, तुमने यहीं पर गलती कर दी। तुम रावण के पास गए थे और शिष्य का स्थान गुरु के चरणों में होता है उसके सिर पर नहीं होता। तब तुम ज्ञान ही प्राप्त करने गए थे तो तुम्हें चाहिए था कि तुम उसके पैरों की तरफ खड़े होते। मन में बिना अहंकार लिए उसे यथोचित रीति से प्रणाम करते तो वह विद्वान् निश्चय ही तुम्हारे प्रणाम का उत्तर देता।

रही बात ज्ञान देने की तो वह ब्राह्मण पुत्र है इसलिए वह अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होता और ज्ञान देने में किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं होता।

मेरी राय है कि तुम एक बार फिर उसके पास जाओ। जिस प्रकार से मैंने बताया है उसी प्रकार से कार्य करो तो निश्चय ही तुम अपने उद्देश्य में सफल हो सकोगे। परन्तु मेरी एक बात का फिर ध्यान रखना कि शिष्य चाहे कितना की बड़ा हो परन्तु गुरु के सामने हमेशा नगण्य है अतः उसके सामने उसी प्रकार से तुम्हारा व्यवहार हो जिस प्रकार से एक योग्य शिष्य का गुरु के प्रति व्यवहार होता है। जाते समय और प्रणाम करते समय तुम्हारे मन में किसी प्रकार का दर्प, घमण्ड या अंहकार आदि न हो।

राम की आज्ञा का पालन करते हुए लक्ष्मण एक बार पुनः रावण के पास गए जहां युद्ध स्थल में रावण पड़ा हुआ था और लक्ष्मण ने उसके चरणों की तरफ खड़े होकर क्रमबद्ध रूप से प्रणाम करते हुए कहा कि मैं दशरथ नन्दन लक्ष्मण आपको श्रद्धा सहित प्रणाम करता हूं।

रावण ने तुरन्त आशीर्वाद देते हुए कहा कि दिर्घायु हो, विजयी हो।

प्रसन्न मन से लक्ष्मण ने इसके बाद निवेदन किया कि मैं श्री राम की विशेष आज्ञा से आपके पास कालज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए उपस्थित हुआ हूं। मुझे यदि आप सुपात्र समझें तो इसकी शिक्षा और ज्ञान दें।

रावण ने समय के महत्व को समझाते हुए बताया कि समय का चक्र निरन्तर चलता रहता है और जो व्यक्ति अपने जीवन में इस समय के चक्र को पहचान लेता है वह व्यक्ति निश्चय ही अपने लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो जाता है। उसकी गति को और प्रगति को विधाता भी नहीं रोक सकते। परन्तु यहां पर यह बात भी भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि प्रत्येक क्षण का अपना एक अलग महत्व होता है और प्रत्येक क्षण की स्वन्त्रत सत्ता होती है। एक क्षण का सारे क्षण में न तो मुकाबला किया जा सकता है और न उन दोनों क्षणों की आपस में तुलना ही की जा सकती है। एक क्षण में कार्य किया हुआ पूर्णतः सफल हो जाता है जबकि दूसरे क्षण में उसी कार्य को करने पर असफलता हाथ लगती है।

रावण ने अपने इस कथन का उदाहरण देते हुए बताया कि मैं तुम्हारे सामने इस तथ्य को अभी स्पष्ट कर देता हूं। उसने पड़े-पड़े ही सात पत्ते उठाकर एक ही क्रम से रखे और अपने दूसरे हाथ में लोहे की एक पिन लेकर लक्ष्मण को बताया कि मैं एक विशेष क्षण में इस पिन से इन सातों पत्तों को बींधता हूं और तुम स्वयं प्रत्येक क्षण की स्वत्रन्त सत्ता को समझ सकोगे।

कुछ ही समय एक निश्चित क्षण पहचान कर रावण ने वह पिन उन जुड़े हुए सात पत्तों में घुसेड दीं। लक्ष्मण ने आश्चर्यचकित होकर देखा कि उस पिन के दबाव से पहला पत्ता सोने में परिवर्तित हो गया था दूसरा पता चांदी में, तीसरा ताम्बे में, चौथा लोहे में और इस प्रकार सातवां पत्ता केवल पत्ता ही रह गया था उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आ पाया था।

रावण ने समझाते हुए बताया कि यही क्षणों को पहचान है और उसका महत्व है। इन सातों पत्तों को बींधते समय ही बहुत ही कम समय लगा था पर इन सातों पत्तों के बींधने में समय के अलग-अलग क्षणांश का उपयोग हुआ था और तुम स्वयं देख सकते हो कि एक क्षणांश का महत्व एक दूसरे क्षणांश से कितना अलग है। पहले क्षणांश में किए गए कार्य से यह साधारण-सा पत्ता सोने में परिवर्तित हो गया है। जबकि दूसरा पत्ता केवल चांदी का ही रह गया और सातवें पत्ते में किसी प्रकार का कोई विकार नहीं हुआ है।

इसी प्रकार व्यक्ति को क्षण को पहचानने की शक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिए और उन क्षणों की पहचान जो पूर्ण रूप से कर लेता है, उसे जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता और उसके बाद रावण ने विस्तार से काल ज्ञान मंत्र की दीक्षा दी।

यह घटना चाहे रामायण में प्राप्त नहीं होती हो, वर्षों से मौखिक परम्परा के रूप में यह घटना हमें प्राप्त होती है तो इस घटना से यह तो ज्ञात हो ही जाता है कि समय को पहचानना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है और यदि हम समय को पहचान कर उसके अनुसार कार्य करें तो निश्चय ही हम अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

काल ज्ञान के बारे में विधिवत् उल्लेख मिहिराचार्य के ग्रन्थों से प्राप्त होता है। काफी समय पहले मैं एक साधू के पास कुछ समय तक रहा था उसे मिहिराचार्य कृत इस काल ज्ञान की पूरी-पूरी जानकारी थी और जब मैंने इस बारे में उत्सुकता प्रकट की तो उस साधु ने मुझे इसे समझाने में किसी प्रकार का कोई अन्य विचार अपने मन में नहीं रखा।

मिहिराचार्य ने तो स्पष्ट रूप से बताया है कि काल ज्ञान के अनुसार कार्य करने पर निश्चय ही पूर्ण सफलता और सिद्धि होती ही है। यद्यपि हमारे ज्योतिष ज्ञान में दिशा-सूल, योगिनी, चंन्द्रमा आदि का उल्लेख है और यह भी बताया है कि इन सारे तथ्यों को ध्यान में रखकर ही शुभ कार्य प्रारम्भ करना

चाहिए परन्तु मिहिराचार्य ने बताया है कि यदि काल ज्ञान हमें हो तो इन अ
तथ्यों को ध्यान में रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि ये क्षण अप
आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं इसलिए इन पर न तो दीक्षूल का प्रभाव पड़
है और न व्यतिपात, योगनी, विशाशूल आदि का अशुभ प्रभाव व्याप्त होता है
यात्रा, विवाह, शुभ कार्य प्रारम्भ करना तथा किसी से मिलने जाना और कि
भी प्रकार का शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व इस समय का ज्ञान कर ले
चाहिए और यदि इस समय में कोई कार्य प्रारम्भ करते हैं तो निश्चय ही उस
पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं।

मिहिराचार्य ने तो स्पष्ट लिखा है :

ना तीर्थि नक्षत्र न योग करण तथा
शिवस्थाज्ञां समावाय वेद कार्य विचिंतयेत
न वारादि ग्रहाश्चैक व्यतिपातो न विष्टि च ।
दिक्शूलं चन्द्रमा नैव तथा पचाँग दर्शनम् ॥
मोहन्नं अमृतं शून्यं क्षण चतुष्टयम् ।
क्रियते मिहिचार्यो योगो ब्राहादि मंगले ॥
महेन्द्रो विजयो नित्यं अमृते कार्य शोभनम् ।
वक्रे गति विलम्बस्था च शून्ये च मरणं ध्रुवम् ॥
ज्योर्तिग्रंथं समस्तेष सारमा कृष्या यत्नतः ।
क्रियते मिहिराचार्यो योगो ब्राहादि मंगले ॥

मिहिराचार्य के अनुसार इस कालज्ञान अर्थात् आगे के ग्रन्थ में जो काल
ज्ञान विवेचन किया है उसके अनुसार कार्य प्रारम्भ करने पर पूर्ण सफलत
मिलती ही है। इस प्रकार कार्य प्रारम्भ करते समय तिथि, नक्षत्र, योग, करण
बार, ग्रह, व्यतिपात, दीक्षूल, चन्द्रमा आदि का विवेचन करने या उसको जानने
की कोई आवश्यकता नहीं है। मिहिराचार्य ने स्पष्ट बताया है कि पचांग देखने
की कोई आवश्यकता ही नहीं है। बस, इस बात का ध्यान रखा जाय जो भी
कार्य हम प्रारम्भ करें वह इस काल गणना के अनुसार ही प्रारम्भ करें तो उससे
हमें निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

भारतीय गणना के अनुसार चैत से फाल्गुन तक बारह महीने होते हैं।
मिहिराचार्य ने इन बारह महीनों को तीन भागों में विभाजित किया है जो नि

म्न प्रकार से हैं:

1. पहला भाग:

इस भाग में निम्नलिखित महीनों का समावेश है—

1. चैत, 2. बैशाख, 3. सावन, 4. भाद्रपद, 5. माघ, 6. फाल्गुन।

2. दूसरा भाग :

इस भाग में निम्नलिखित महीनों का समावेश है—

1. ज्येष्ठ, 2. आषाढ़।

3. तीसरा भाग :

इस भाग में निम्नलिखित महीनों का समावेश है—

1. आश्विन 2.कार्तिक, 3. मार्गशीर्ष, 4. पौष

आगे के पृष्ठों में मैंने जो कालज्ञान विवरण दिया है वह इन भारतीय
महीनों को आधार बनाकर के ही किया है। परन्तु अंग्रेजी तारीख से समझने
वाले व्यक्तियों के लिए इसमें कुछ कठिनाई आ सकती है। यदि इन भारतीय
महीनों का अंग्रेजी तारीखों से सामंज्य स्थापित करें तो सामान्य रूप से निम्न
प्रकार से सामंजस्य बनेगा।

भारतीय मास	*अंग्रेजी मास*
1. चैत	10 मार्च से 13 अप्रैल
2. बैसाख	14 अप्रैल से 13 मई
3. ज्येष्ठ	14 मई से 13 जून
4. आषाढ़	14 जून से 13 जुलाई
5. श्रावण	14 जुलाई से 13 अगस्त
6. भाद्रपद	14 अगस्त से 13 सितम्बर
7. आश्विन	14 सितम्बर 13 अक्टूबर
8. कार्तिक	14 अक्टूबर से 13 नवम्बर
9. मार्गशीर्ष	14 नवम्बर से 13 दिसम्बर
10. पौष	14 दिसम्बर से 13 जनवरी
11. माघ	14 जनवरी से 13 फरवरी
12. फाल्गुन	14 फरवरी से 13 मार्च

ऊपर मैंने जो भारतीय महीनों व अंग्रेजी महीनों का सामंजस्य किया है
वह अपने आप में स्थूल है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि इसी तारीख से

भारतीय महीना प्रारम्भ हो या इस भारतीय महीने में इस तारीख तक ही समय हो। परन्तु सामान्यतः भारतीय महीनों का सामंजस्य लगभग इसी समय में होता है। एक दो दिन का अन्तर आ सकता है जो कि पंचांग में देखकर या किसी योग्य विद्वान् से जानकर प्राप्त किया जा सकता है।

मिहिराचार्य ने जो काल ज्ञान विवरण दिया है उसका आधार भारतीय महीने ही हैं। यदि कभी अधिक मास की वजह से अंग्रेजी तिथियों में कुछ अन्तर आ जाए तो ऐसे समय में इस काल ज्ञान के लिए भारतीय महीनों को ही प्रधानता और प्रमाणिकता देनी चाहिए। इस पुस्तक में काल ज्ञान का जो भी विवरण है उसका मूल आधार भारतीय महीने ही रहे हैं।

जो भारतीय महीनों से अपरिचित हैं वे इन महीनों से सम्बन्धित तारीखें का उपयोग कर सकते हैं जैसा कि मैंने पीछे बताया है कि इसमें दो-तीन दिनों से ज्यादा अन्तर नहीं आता।

मिहिराचार्य ने समय को चार भागों में विभाजित किया है जो कि इस प्रकार है :

1. महेन्द्र, 2. अमृत, 3. वक्र, 4. शून्य।

इन चार भागों में उन्होंने महेन्द्र को सबसे अधिक महत्व दिया है। उसके अनुसार महेन्द्रकाल सर्वश्रेष्ठ काल होता है इसमें जो भी कार्य किया जाता है उसमें पूरी सफलता ही मिलती है तथा हम अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हो पाते हैं।

अमृत काल अपने काल में अनुकूल एवं श्रेष्ठ काल है परन्तु इसका महत्व महेन्द्र से बाद में ही आता है। यह काल भी किसी कार्य सिद्धि के लिए पूर्णतः उपयोगी एवं अनुकूल रहता है। यदि कार्य प्रारम्भ करते समय महेन्द्र काल उपलब्ध न हो तो अमृत काल का उपयोग किया जा सकता है।

वक्र काल अपने आप में सामान्य काल कहा गया है। और इस काल अवधि में जो कार्य प्रारम्भ किया जाता है उसमें अनावश्यक विलम्ब तथा बाधाएं आती हैं। यह बात सही है कि वक्र काल में प्रारम्भ किया हुआ कार्य सफल अवश्य होता है परन्तु उसकी सफलता से पहले जरूरत से ज्यादा बाधाएँ, अड़चनें, कठिनाइयाँ, अनावश्यक विलम्ब होता है।

शून्य काल व्यर्थ और निकृष्ट काल है। इस समय में जो भी कार्य प्रारम्भ किया जाता है उसमें सफलता नहीं मिल पाती और व्यर्थ की बाधाएँ

और परेशानियाँ आती ही रहती हैं। अतः यथासंभव किसी कार्य को प्रारम्भ करते समय इस शून्य काल से बचना ही चाहिए।

मिहिराचार्य ने प्रत्येक काल को चार भागों में विभाजित किया है। उदाहरण के लिए महेन्द्र काल को चार अवस्थाओं में या चार-चार भागों में विभाजित किया है जो कि इस प्रकार है:

1. बाल महेन्द्र काल
2. युवा महेन्द्र काल
3. प्रौढ़ महेन्द्र काल
4. वृद्ध महेन्द्र काल

इसी प्रकार अमृत काल को भी चार अवस्थाओं में, वक्र तथा शून्य काल को भी इन्हीं चार अवस्थाओं में विभाजित किया है और उसके बारे में भी स्पष्ट किया गया है। मिहिराचार्य के अनुसार यदि समय हो तो बाल और वृद्ध अवस्था को त्याग देना चाहिए, यथासंभव हो तो इन दोनों काल में कोई कार्य नहीं करना चाहिए। यदि यह संभव हो तो बाल अथवा वृद्ध काल का भी प्रयोग किया जा सकता है।

मिहिराचार्य ने काल ज्ञान में राहू काल का भी समावेश किया है। उनके अनुसार राहू काल प्रत्येक कार्य को दूषित करने में सहायक होता है। उनके अनुसार यदि निश्चित समय में महेन्द्र काल चल रहा हो और उसी समय राहू काल का भी प्रवेश हो गया हो तो वह महेन्द्र काल भी अपने आप में व्यर्थ हो जाता है। अतः राहू काल में भूलकर के भी किसी प्रकार का शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

उदाहरण के लिए चैत्र मास में रविवार के दिन 4-30 से 6-00 बजे तक राहू काल है। वह काल सर्वथा वर्जित है। इसी प्रकार बुधवार के दिन 11-36 से 1-12 तक अमृत काल है जो कि प्रत्येक कार्य के लिए अनुकूल एवं शुभ माना जाता है परन्तु इसी समय में 12 से 1-30 तक राहू काल भी है। और इसी समय में अमृत काल का युवा काल और प्रौढ़ काल भी चलता है। परन्तु अमृत काल का युवा और प्रौढ़ काल होते हुए भी राहू काल की वजह से इस समय का त्याग ही करना उचित माना गया है।

इस दिन राहूकाल 12 बजे से 1-30 तक है अतः 12 बजे से 1-30 तक किसी प्रकार का शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

इसी महीने में शनिवार के दिन 9-13 से 12-24 तक अमृत काल है परन्तु राहू काल 9 बजे से 10-30 तक रहता है अतः यह समय भी उपयुक्त नहीं है।

यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इस समय युवा काल 10 बजे से 10-48 तक है और राहू काल 10-30 ही है अतः 10-48 तक कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है।

यद्यपि सामान्य गणना के अनुसार मैंने इस समय अमृत युवा काल में जो कि 10 बजे से 10-48 तक चलता है। इसके फल में बताया है कि यह समय किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल है परन्तु पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिए कि 10-30 राहू काल है अतः यह काल सर्वथा निश्फल और अशुभ है अतः इस काल का उपयोग नहीं करके 10-31 से 10-48 तक के समय में हो इससे सबन्धित फल समझना चाहिए।

मैंने प्रत्येक समय के साथ-साथ घटी का भी उल्लेख किया है। उदाहरण के लिए चैत्र मास में रविवार के दिन महेन्द्र काल प्रारम्भ में 2 घटी तक है जो कि प्रातः 6 बजे से 6-48 तक है। यद्यपि मैंने स्टैंडर्ड टाइम का उल्लेख कर दिया है परन्तु फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए मैं यह बता दूं कि एक घटी 24 मिनट की होती है।

मिहिराचार्य ने काल ज्ञान विवरण में यह स्पष्ट कर किया है कि दिन का प्रारम्भ 6 बजे से ही करना चाहिए। यद्यपि पृथ्वी गोल है, और अपनी धुरी पर घूमने के कारण सूर्योदय और सूर्यास्त के समय में अन्तर आता रहता है परन्तु मिहिराचार्य ने दिन का प्रारम्भ सूर्योदय या रात्रि का प्रारम्भ सूर्यास्त से न मानकर प्रत्येक ऋतु में और प्रत्येक महीने में दिन का प्रारम्भ स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार 6 बजे से माना है और रात्रि का प्रारम्भ शाम को 6-00 बजे से माना है। अतः इसी समय के अनुसार गणना करनी चाहिए।

इस काल ज्ञान पुस्तक में मैंने सुक्ष्मता के साथ प्रत्येक दिन और रात्रि में समय का विभाजन किया है और महेन्द्र, अमृत, शून्य, वक्र काल को चार अवस्थाओं में विभाजित कर स्पष्ट किया है और साथ-ही-साथ उससे सम्बन्धित फल भी पाठकों के लिए स्पष्ट कर दिया है।

नीचे मैं पाठकों की जानकारी के लिए घटी विवरण स्पष्ट कर रहा हूँ :

घटी	घण्टा मिनट
1	0-24
2	0-48
3	1-12
4	1-36
5	2-00
6	2-24
7	2-48
8	3-12
9	3-36
10	4-00

मैंने पिछले काफी समय से इस काल ज्ञान के बारे में अनुभव किया है और मैंने यह देखा है कि यदि इस काल का ज्ञान का सहारा लिया जाय तो निश्चय ही हम अपने प्रत्येक उद्देश्य में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

महेन्द्रगढ़ के पास एक प्रसिद्ध योग साधुवत् रूप में रहते हैं इन्हें इस काल का पूरा-पूरा ज्ञान है। मुझे उनके साथ भी कुछ घंटे व्यतीत करने का अवसर मिला था। चर्चा के दौरान उन्होंने इससे सम्बन्धित अपना अनुभव बताते हुए कहा कि यहां के प्रसिद्ध सेठ हिम्मतराम जी प्रारम्भ में अत्यन्त ही सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे थे परन्तु उनके हृदय में दया, करुणा, और साधु सन्तों के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी। वे बिना नागा नित्य शाम को मेरे पास आते और शाम को घंटे दो घंटे बैठकर चले जाते। मैं उनकी आर्थिक स्थिति के बारे में पूरी तरह से जानकार था परन्तु न तो उन्होंने कभी इस सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की और न मैंने उनको इस सम्बन्ध में कुछ कहा।

परन्तु जब एक दिन वे मेरे पास शाम को आए तो उनके चेहरे पर जरूरत से ज्यादा परेशानी झलक रही थी। मैंने जब कारण पूछा तो उनकी आँखों से आँसू छलछला आए। खोदने पर उन्होंने बताया कि मैं इस दुनिया में कितना अभागा हूं कि प्रयत्न करने पर भी आर्थिक दृष्टि से सफल नहीं हो पा रहा हूं। न तो मेरे पास व्यापार ही है जिसकी वजह से मैं इस जीवन में सफल हो सकूं।

मैं बनिया का बेटा हूं और बनिये के बेटे की प्रतिष्ठा व्यापार ही होता है। मेरे पास न तो व्यापार है और न ही पैसा है।

बाबाजी ने बताया कि उसकी इस स्थिति को देखकर मैंने उसे बाहर जाकर व्यापार करने की सलाह दी और सोच विचार कर महेन्द्र में ही यात्रा प्रारंभ करने की आज्ञा दी और कहा कि तुम तब तक वापिस मत आना जब तक कि तुम अपने व्यापार में पूर्णतः सफल नहीं हो जाओ।

आज हिम्मतराम जी महेन्द्रगढ़ के प्रसिद्ध दानवीर सेठ हैं। बम्बई दिल्ली में उनकी बड़ी-बड़ी कोठियां हैं और एक सफल व्यापारी के रूप में भली प्रकार से स्थापित हो चुके हैं।

मैंने स्वयं ही अपने में यह देखा है कि यदि छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्य महेन्द्र काल अथवा अमृत काल में प्रारम्भ किया जाए तो इस कार्य में निश्चित ही पूर्ण सफलता मिलती है।

●●●

भारतीय मास में विवरण	अंग्रेजी मास में विवरण
1. चैत्र	14 मार्च से 13 अप्रैल
2. बैसाख	14 अप्रैल से 13 मई
3. श्रावण	14 जुलाई से 13 अगस्त
4. भाद्रपद	14 अगस्त से 13 सितम्बर
5. माघ	14 जनवरी से 13 फरवरी
6. फाल्गुन	14 फरवरी से 13 मार्च

रविवार (दिन)

6-00 से 6-48 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 6-12 से 6-24—प्रत्येक के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

6-48 से 10-00

अमृत

8 घटी

बाल 6-48 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 7-36 से 8-20—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 8-24 से 9-32—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 2-00 तक

वक्र

10 घटी

बाल 10-00 से 11-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 11-00 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 12-00 से 1-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 1-00 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 5-12 तक

शून्य
8 घटी

बाल 2-00 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-24 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

5-12 से 6-00 तक

अमृत
2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-48 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणत: अनुकूल
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

रविवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य
2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 7-36 तक

महेन्द्र
2 घटी

बाल 6-48 से 7-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यत: अनुकूल
युवा 7-00 से 7-12—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 7-12 से 7-24—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 7-24 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्यत: अनुकूल

7-36 से 8-24 तक

शून्य
2 घटी

बाल 7-36 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 7-48 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 8-00 से 8-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 8-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

8-24 से 10-00

अमृत
4 घटी

बाल 8-24 से 8-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 8-48 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-36 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणत: अनुकूल

10-00 से 10-48 तक

शून्य
2 घटी

बाल 10-00 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 10-12 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 10-24 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 10-36 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

10-48 से 1-12 तक

वक्र
6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 12-00 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 12-36 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

1-12 से 3-36 तक

शून्य
6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 1-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 3-00 से 2-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 4-24 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 3-48 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए सफलतादायक
प्रौढ़ 4-00 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

सोमवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

अमृत

4 घटी

बाल 3-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल
(राहूकाल 7-36 से 10-48 तक)

7-2 से 10-48 तक

वक्र

8 घटी

बाल 7-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)
युवा 8-24 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)
प्रौढ़ 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 10-00 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

10-48 से 1-12 तक

अमृत

6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 12-00 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 12-36 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

1-2 से 3-36 तक

वक्र

6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 1-48 से 2-34—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 2-24 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

3-12 से 5-12 तक

अमृत

5 घटी

बाल 3-36 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 4-00 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए भव अनुकूल
प्रौढ़ 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 6-00 तक

शून्य

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए बाधापूर्ण

सोमवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

वक्र
4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 7-12 से 7-16—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

महेन्द्र
2 घटी

बाल 7-36 से 8-00—किसी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

9-12 से 10-00 तक

अमृत
2 घटी

बाल 9-12 से 9-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-24 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 9-36 से 9-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 9-48 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 1-12 तक

वक्र
8 घटी

बाल 10-00 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-30 से 13-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 12-24 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

1-12 से 2-48 तक

अमृत
4 घटी

बाल 1-12 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 4-24 तक

शून्य
4 घटी

बाल 2-24 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 5-12 तक

वक्र
2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 4-48 से 5-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-00 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

5-12 से 6-00 तक

शून्य
2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

मंगलवार (दिन)

6-00 से 8-24 तक

अमृत

6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 7-12 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 7-48 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

8-24 से 9-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 8-54 से 8-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 8-36 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 8-48 से 9-00—प्रत्येक शुभ के लिए विपरीत

वृद्ध 9-00 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

9-12 से 10-00 तक

वक्र

2 घटी

बाल 9-12 से 9-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 9-24 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 9-56 से 9-48—किसी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 9-49 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

10-00 से 12-24 तक

अमृत

6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-48 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

12-24 से 3-36 तक

न्य

घटी

बाल 12-20 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 1-12 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 2-00 से 2-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 2-48 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

(राहूकाल 3700 से 4-30 तक)

3-36 से 5-12 तक

मृत

घटी

बाल 3-36 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 3-60 से 4-30 तक)

युवा 4-00 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

(राहूकाल 4-00 से 4-30 तक)

प्रौढ़ 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

वृद्ध 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 600 तक

न्य

घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 5-24 से 6-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

मंगलवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

क्र

घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

महेन्द्र

4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकू

युवा 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

9-12 से 10-00 तक

अमृत

2 घटी

बाल 9-12 से 9-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 9-24 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 9-36 से 9-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-48 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकू

10-00 से 12-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 11-48 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 12-24 से 12-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 12-48 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 1-12 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 1-36 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 2-48 तक

न्य

2 घटी

बाल 2-00 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 2-12 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 2-24 से 2-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 2-36 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-48 से 3-36 तक

क्र

2 घटी

बाल 2-48 से 3-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 3-00 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 3-12 से 3-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 4-24 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

3-36 से 4-24 तक

हेन्द्र

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 3-48 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

4-24 से 6-00 तक

मृत

घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

बुधवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

अमृत

4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 8-48 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकू

9-12 से 11-36 तक

वक्र

6 घटी

बाल 9-12 से 9-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 9-48 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 10-24 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 11-00 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

11-36 से 1-12 तक

अमृत

4 घटी

बाल 11-36 से 12-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 12-00 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

प्रौढ़ 12-24 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

वृद्ध 12-48 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

1-12 से 2-30 तक

शून्य

2 घटी

बाल 1-12 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

युवा 1-24 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

प्रौढ़ 1-36 से 1-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 1-48 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-00 से 2-36 तक

वक्र

4 घटी

बाल 2-00 से 2-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 2-48 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 3-12 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

3-36 से 4-24 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 3-36 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 3-48 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

बुधवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य
2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 9-12 तक

अमृत
6 घटी

बाल 6-48 से 7-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 7-24 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 8-00 से 8-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 8-36 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

9-12 से 10-48 तक

महेन्द्र
4 घटी

बाल 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 9-36 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 10-00 से 10-25—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 10-24 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

10-48 से 12-24 तक

वक्र
4 घटी

बाल 10-48 से 11-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 12-00 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-00 तक

शून्य
4 घटी

बाल 12-24 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 12-48 से 1-12—किसी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 1-12 से 1-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 1-36 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-00 से 6-00 तक

अमृत
10 घटी

बाल 2-00 से 3-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 3-00 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 4-00 से 5-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-00 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

गुरुवार (दिन)

6-00 से 8-24 तक

अमृत
6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 7-12 से 7-46—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 7-48 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

8-24 से 8-36 तक

शून्य
2 घटी

बाल 8-24 से 8-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 8-36 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 8-48 से 9-00— प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 9-04 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

9-12 से 10-48 तक

वक्र

4 घटी

बाल 9-12 से 9-36 —प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 9-36 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 10-00 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 10-24 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

10-48 से 1-12 तक

अमृत

6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 12-00 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 12-36 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

1-12 से 4-24 तक

वक्र

8 घटी

बाल 1-12 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

युवा 2-00 से 2-48—किसी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
(राहूकाल 1-30 से 3-00)

प्रौढ़ 2-28 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

वृद्ध 3-36 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 9-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

गुरुवार

बुधवार (रात्रि)

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-24 से 6-28—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

महेन्द्र

4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

9-12 से 10-00 तक

अमृत

2 घटी

बाल 9-12 से 9-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 9-24 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 9-36 से 9-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-48 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 1-12 तक

वक्र

8 घटी

बाल 10-00 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-36 से 12-24—किसी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 12-24 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

1-12 से 2-48 तक

अमृत

4 घटी

बाल 1-12 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 4-24 तक

शून्य

4 घटी

बाल 2-48 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 3-36 से 4-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

शुक्रवार (दिन)

6-00 से 6-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 1-12 तक

अमृत

16 घटी

बाल 6-48 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-24 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए व अनुकूल

प्रौढ़ 10-00 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

वृद्ध 11-36 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

1-12 से 4-24 तक

वक्र

8 घटी

बाल 1-12 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 2-00 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 3-36 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 5-12 तक

अमृत

2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-36 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 4-48 से 5-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-00 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 6-00 तक

शून्य

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

शुक्रवार (रात्रि)

6-00 से 7-36

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 8-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 7-36 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 7-48 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 8-00 से 8-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 8-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

8-24 से 10-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 9-00 से 9-36—किसी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 10-12 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 1-12 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 12-00 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 12-36 से 1-12—प्रत्येक के लिए विपरीत

1-12 से 3-36 तक

महेन्द्र

6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 1-48 से 2-24—प्रत्येक कार्य के पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 2-24 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48— प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

शनिवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 8-24 तक

शुक्रवार (रात्रि)

6-00 से 7-36

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 8-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 7-36 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 7-48 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 8-00 से 8-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 8-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

8-24 से 10-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-00 से 9-36—किसी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-12 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 1-12 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 12-00 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 12-36 से 1-12—प्रत्येक के लिए विपरीत

1-12 से 3-36 तक

गहेन्द्र

6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 1-48 से 2-24—प्रत्येक कार्य के पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 2-24 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48— प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

शनिवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 8-24 तक

वक्र

2 घटी

बाल 7-36 से 7-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 7-48 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 8-00 से 8-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 8-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 9-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 8-24 से 8-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 8-36 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 8-48 से 9-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 9-00 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

(राहूकाल 9-00 से 10-30)

9-12 से 12-24 तक

अमृत

8 घटी

बाल 9-12 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

युवा 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

प्रौढ़ 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-36 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकू

12-24 से 1-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 12-24 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 12-36 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 12-48 से 1-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 1-00 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 2-00 तक

वक्र

2 घटी

बाल 1-12 से 1-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 1-24 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 1-36 से 1-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 1-48 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 3-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक

प्रौढ़ 2-48 से 3-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 3-12 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 5-12

अमृत

2 घटी

बाल 3-36 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-00 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 6-00 तक

शून्य

4 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक

प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

शनिवार (रात्रि)

6-00 से 8-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 7-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-48 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 10-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक के लिए शुभ

युवा 9-00 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 10-12 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 12-24 तक

वक्र

4 घटी

बाल 10-48 से 11-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 12-00 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-00 तक

शून्य

4 घटी

बाल 12-24 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 12-24 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 1-12 से 1-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 1-36 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-00 से 3-26 तक

अमृत

4 घटी

बाल 2-00 से 2-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 2-48 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

●●●

भारतीय मास विवरण	अंग्रेजी मास विवरण
1. ज्येष्ठ	14 मई से 13 जून
2. आषाढ़	14 जून से 13 जुलाई

रविवार (दिन)

6-00 से 8-24 तक

अमृत

6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 7-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 7-12 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 7-48 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

8-24 से 11-36 तक

वक्र

8 घटी

बाल 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 10-48 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

11-36 से 2-48 तक

अमृत

8 घटी

बाल 11-36 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 12-24 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 1-12 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-00 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 3-36 तक

शून्य

2 घटी

बाल 2-48 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-00 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 3-12 से 3-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 3-24 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 4-24 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 3-48 से 4-00—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण असफलतादायक

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

4-24 से 6-00

शून्य

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक (राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत (राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी कार्य के लिए बाधापूर्ण (राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

रविवार (रात्रि)

6-00 से 8-24 तक

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-8 से 10-00 तक

अमृत

8 घटी

बाल 6-48 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 7-36 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 8-24 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 12-24 तक

वक्र
6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 11-48 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-48 तक

अमृत
6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ
वृद्ध 2-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 4-24 तक

वक्र
4 घटी

बाल 2-48 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 6-00 तक

महेन्द्र
4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 4-48 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

सोमवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

अमृत
4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ अनुकूल
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल
(राहूकाल 7-36 से 9-00 तक)

7-36 से 9-12 तक

वक्र
2 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)
युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)
प्रौढ़8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)
वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 7-30 से 9-00 तक)

9-12 से 12-36 तक

अमृत
6 घटी

बाल 9-12 से 9-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-48 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-24 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 11-00 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 6-00 तक

वक्र

16 घटी

बाल 11-36 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 1-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 2-48 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 4-24 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

सोमवार (रात्रि)

6-00 से 8-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 7-12 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 7-48 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 11-36 तक

अमृत

8 घटी

बाल 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 2-48 तक

वक्र

8 घटी

बाल 11-36 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 12-24 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 1-12 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 2-00 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-48 से 3-36 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 2-48 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 3-00 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 3-12 से 3-24—किसी भी कार्य के लिए समय अनुकूल
वृद्ध 3-24 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

3-36 से 6-00 तक

वक्र

6 घटी

बाल 3-36 से 4-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 4-12 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 4-48 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-24 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

मंगलवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के विपरीत
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 10-00 तक

वक्र

6 घटी

बाल 7-36 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 8-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 8-48 से 9-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 9-24 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

10-00 से 11-36 तक

अमृत

4 घटी

बाल 10-00 से 10-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 10-24 से10-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 10-48 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 1-12 तक

शून्य

4 घटी

बाल 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 12-00 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 12-24 से 12-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 12-48 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 3-36 तक

वक्र

6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 1-48 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 2-24 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकू

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अ

मंगलवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 10-00 तक

अमृत

8 घटी

बाल 6-48 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 7-36 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनु

प्रौढ़ 8-24 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः

10-00 से 12-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-00 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 10-30 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम

प्रौढ़ 1-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 5-12 तक

वक्र

6 घटी

बाल 2-48 से 3-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 3-24 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 4-00 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 4-36 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

5-12 से 6-00 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 5-24 से 5-36—प्रत्येक कार्य के लिए सफलतादायक

प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

बुधवार (दिन)

6-00 से 9-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण विपरीत

वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 8-24 तक

महेन्द्र

4 घटी

बाल 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

8-24 से 10-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 8-24 से 8-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-48 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-36 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 12-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकार

युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 11-48 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

12-24 से 1-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 12-24 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

युवा 12-36 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

प्रौढ़ 12-48 से 1-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

वृद्ध 1-00 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण
(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

1-12 से 2-48 तक

वक्र
4 घटी

बाल 1-12 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 2-24 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-48 से 5-12 तक

अमृत
4 घटी

बाल 2-48 से 3-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 3-24 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 4-00 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 4-36 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 6-00 तक

शून्य
2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

बुधवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

वक्र
4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

अमृत
4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 8-48 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

9-12 से 9-12 तक

वक्र
8 घटी

बाल 9-12 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 11-36 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-48 तक

अमृत
6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 2-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 6-00 तक

शून्य
8 घटी

बाल 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-36 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-24 से 5-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-12 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

गुरुवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

अमृत

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 6-24 से 6-48—किसी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

7-36 से 10-00 तक

वक्र

6 घटी

बाल 7-36 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 8-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 8-48 से 9-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 9-24 से 10-00—प्रत्येक के लिए विपरीत

10-00 से 1-36 तक

अमृत

4 घटी

बाल 10-00 से 10-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 10-24 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 10-48 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 1-12 तक

शून्य

4 घटी

बाल 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 12-00 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 12-24 से 12-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 12-48 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 3-36 तक

वक्र

6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

युवा 1-48 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

प्रौढ़ 2-24 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

वृद्ध 3-00 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

अमृत

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

गुरुवार (रात्रि)

6-00 से 9-12 तक

वक्र

6 घटी

बाल 6-00 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-48 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 7-36 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

9-12 से 11-36 तक

अमृत

6 घटी

बाल 9-12 से 9-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 9-48 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकू

प्रौढ़ 10-24 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-00 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकू

11-36 से 2-00 तक

वक्र

6 घटी

बाल 11-36 से 12-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 12-12 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 12-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 1-24 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 4-24 तक

अमृत

6 घटी

बाल 2-00 से 2-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 2-36 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 3-12 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 3-48 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकू

4-24 से 6-00 तक

वक्र

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक शुभ के लिए विपरीत

शुक्रवार (दिन)

6-00 से 6-48 तक

अमृत

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

6-48 से 7-36 तक

वक्र

2 घटी

बाल 6-48 से 7-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 7-00 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 7-12 से 7-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-24 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 10-00 तक

अमृत

2 घटी

बाल 7-36 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 8-48 से 9-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-24 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 12-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

वृद्ध 11-48 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

12-24 से 3-36 तक

अमृत

8 घटी

बाल 12-24 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 1-12 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 2-00 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

वक्र

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

शुक्रवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 9-12 तक

अमृत

4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 8-48 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

9-12 से 10-48 तक

शून्य

4 घटी

बाल 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 9-36 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 10-00 से 10-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 10-24 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

10-48 से 11-36 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 10-48 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 11-00 से 11-12—प्रत्येक के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 11-12 से 11-24—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 11-24 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

11-36 से 1-12 तक

वक्र

4 घटी

बाल 11-36 से 12-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 12-00 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 12-24 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 12-48 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

1-12 से 2-48 तक

अमृत

4 घटी

बाल 1-12 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 6-00 तक

शून्य

8 घटी

बाल 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 3-36 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 4-24 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

शनिवार (दिन)

6-00 से 6-48 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

युवा 6-12 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

6-48 से 9-12 तक

शून्य

6 घटी

बाल 6-48 से 7-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 7-24 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 8-00 से 8-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 8-36 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

9-12 से 12-24 तक

अमृत

8 घटी

बाल 9-12 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

युवा 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

प्रौढ़ 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 11-36 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

12-24 से 4-24 तक

वक्र

10 घटी

बाल 12-24 से 1-24—प्रत्येक कार्य के लिए हानिकारक

युवा 1-24 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 2-24 से 3-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 3-24 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

शून्य

4-घटी

बाल 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

शनिवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 8-24 तक

वक्र

4 घटी

बाल 6-48 से 7-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 9-12 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 8-24 से 8-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 8-36 से 8-48—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 8-48 से 9-00—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 9-00 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

9-12 से 10-48 तक

अमृत

4 घटी

बाल 9-12 से 9-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-36 से10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-00 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-24 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 2-48 तक

शून्य

10 घटी

बाल 10-48 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 11-48 से 12-8—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 12-48 से 1-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 1-48 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-48 से 3-36 तक

अमृत

घटी

बाल 2-48 से 3-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 3-00 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 3-12 से 3-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 3-24 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

3-3 से 4-24 तक

वक्र

2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 4-00 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 5-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 4-36 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक
प्रौढ़ 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-12 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 5-12 तक

अमृत

6 घटी

बाल 5-12 से 5-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-48 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

●●

भारतीय मास विवरण	अंग्रेजी मास विवरण
1. आश्विन	14 सितम्बर से 13 अक्टूबर
2. कार्तिक	14 अक्टूबर से 13 नवम्बर
3. मार्गशीर्ष	14 अक्टूबर से 13 दिसम्बर
4. पौष	14 सितम्बर से 13 जनवरी

रविवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त

प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 10-00 तक

शून्य

6 घटी

बाल 7-36 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 8-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 8-48 से 9-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 9-24 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-00 से 12-24 तक

वक्र

6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 11-48 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 2-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 4-24 तक

वक्र

8 घटी

बाल 2-48 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 3-36 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 5-12 तक

अमृत

2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
(राहूकाल 4-00 से 6-00 तक)

युवा 4-36 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

प्रौढ़ 4-48 से 5-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

वृद्ध 5-00 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

5-12 से 6-00 तक

शून्य

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सफलतादायक

(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण
(राहूकाल 4-30 से 6-00 तक)

रविवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

शून्य
4 घटी
बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 9-12 तक

अमृत
4 घटी
बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 8-48 से 9-13—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

9-12 से 11-36 तक

वक्र
6 घटी
बाल 9-12 से 9-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 9-48 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 10-24 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 11-00 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

11-36 से 2-00 तक

अमृत
6 घटी
बाल 11-36 से 12-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 12-12 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 12-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 1-48 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-00 से 3-36 तक

शून्य
4 घटी
बाल 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 2-48 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 3-12 से 3-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 6-00 तक

वक्र
6 घटी
बाल 3-36 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 4-12 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-48 से 5-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-24 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

सोमवार (दिन)

6-00 से 9-12 तक

अमृत
8 घटी
बाल 6-00 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 6-48 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 7-36 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 8-24 से 9-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

9-12 से 10-48 तक

महेन्द्र
4 घटी
बाल 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 9-36 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक

प्रौढ़ 10-00 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 10-24 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

10-48 से 1-12 तक

शून्य
6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 11-24 से 12-00—किसी कार्य के लिए असफलतादायक
प्रौढ़ 12-00 से 12-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 12-36 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 3-36 तक

अमृत
6 घटी

बाल 1-12 से 1-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल

3-36 से 6-00 तक

महेन्द्र
6 घटी

बाल 3-36 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 4-12 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 4-48 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 5-24 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

सोमवार (रात्रि)

6-00 से 8-24 तक

चक्र
6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 7-12 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 7-48 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 11-36 तक

अमृत
8 घटी

बाल 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 2-00 तक

चक्र
6 घटी

बाल 8-24 से 12-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 12-12 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 12-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 1-24 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 3-36 तक

अमृत
6 घटी

बाल 2-00 से 2-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 2-48 से 3-12—किसी भी काम के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य
2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

वक्र

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

मंगलवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

अमृत

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

7-36 से 10-00 तक

वक्र

6 घटी

बाल 7-36 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 8-12 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 8-48 से 9-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 9-28 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

10-00 से 10-48 तक

अमृत

2 घटी

बाल 10-00 से 10-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 10-12 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-24 से 10-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-36 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 12-24 तक

शून्य

4 घटी

बाल 10-48 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 11-36 से 12-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 12-00 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

12-24 से 2-48 तक

महेन्द्र

6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 1-00 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफल सफलतादायक
प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 2-12 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

2-48 से 5-12 तक

शून्य

8 घटी

बाल 2-48 से 3-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)
युवा 3-24 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)
प्रौढ़ 4-00 से 4-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 3-00 से 4-30 तक)
वृद्ध 4-36 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

5-12 से 6-00 तक

वक्र

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

मंगलवार (रात्रि)

6-00 से 8-24 तक

वक्र
6 घटी

बाल 6-00 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 6-36 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 7-12 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 7-48 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-24 से 11-36 तक

अमृत
4 घटी

बाल 8-24 से 8-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 2-00 तक

वक्र
6 घटी

बाल 11-36 से 12-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 12-12 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 12-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 1-24 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 3-36 तक

अमृत
4 घटी

बाल 2-00 से 2-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 2-24 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 2-48 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

3-36 से 4-24 तक

शून्य
2 घटी

बाल 3-36 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-48 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-00 से 4-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-12 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

4-24 से 6-00 तक

वक्र
4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 5-12 से 5-35—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

बुधवार (दिन)

6-00 से 6-48 तक

शून्य
2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 8-24 तक

महेन्द्र
4 घटी

बाल 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए समय
वृद्ध 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

8-12 से 11-36 तक

अमृत
8 घटी

बाल 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-12 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 10-00 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-18 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

11-36 से 2-00 तक

वक्र
6 घटी

बाल 11-36 से 12-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)
युवा 12-12 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)
प्रौढ़ 12-48 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
(राहूकाल 1-24 से 1-30—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 12-00 से 1-30 तक)

2-00 से 5-12 तक

शून्य
8 घटी

बाल 2-00 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 2-48 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 4-24 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

5-12 से 6-00 तक

वक्र
2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

बुधवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य
2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 10-48 तक

अमृत
10 घटी

बाल 6-48 से 7-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 7-48 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 8-48 से 9-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 9-48 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

1-12 से 2-48 तक

वक्र
8 घटी

बाल 10-48 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 11-36 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 12-24 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 1-12 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 4-24 तक

अमृत
6 घटी

बाल 2-00 से 2-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 2-36 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 3-12 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 3-48 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

4-24 से 5-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 4-36 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 4-48 से 5-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 5-00 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

5-12 से 6-00 तक

वक्र

2 घटी

बाल 5-12 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 5-24 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

गुरुवार (दिन)

6-00 से 6-48

अमृत

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 6-24 से 6-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 6-36 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

6-48 से 8-24 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 7-36 से 8-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

8-24 से 10-48 तक

वक्र

6 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 9-00 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी शुभ कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 10-12 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-48 से 12-24 तक

अमृत

4 घटी

बाल 10-48 से 11-12—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 12-00 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

12-24 से 1-12 तक

वक्र

4 घटी

बाल 12-24 से 12-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 12-36 से 12-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त

प्रौढ़ 12-48 से 1-00—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत

वृद्ध 1-00 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 2-48 तक

वक्र

4 घटी

बाल 1-12 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

युवा 1-36 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

प्रौढ़ 2-00 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
(राहूकाल 1-30 से 3-00 तक)

वृद्ध 2-24 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-48 से 5-12 तक

अमृत

4 घटी

बाल 2-48 से 3-24—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
(राहूकाल 3-30 से 4-00 तक)
युवा 3-24 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 4-00 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 4-36 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

5-12 से 6-00 तक

महेन्द्र
4 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 5-24 से 5-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

6-00 से 7-36 तक

गुरुवार रात्रि

शून्य
4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 9-12 तक

वक्र
4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

9-12 से 10-00 तक

शून्य
6 घटी

बाल 0-12 से 9-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक

युवा 9-24 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 9-36 से 9-48—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 9-48 से 10-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

10-00 से 12-24 तक

अमृत
6 घटी

बाल 10-00 से 10-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 10-36 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 11-12 से 11-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 11-48 से 12-44—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

121-24 से 12-48 तक

वक्र
6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 2-12 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-48 से 3-36 तक

शून्य
2 घटी

बाल 2-48 से 3-00—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 3-00 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 3-12 से 3-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 3-24 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए बाधापूर्ण

3-36 से 6-00 तक

वक्र
6 घटी

बाल 3-36 से 4-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 4-12 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-48 से 5-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-24 से 6-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

शुक्रवार (दिन)

6-00 से 9-12 तक

वक्र

8 घटी

बाल 6-00 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 6-48 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त

प्रौढ़ 7-36 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 8-24 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

9-12 से 10-48 तक

अमृत

4 घटी

बाल 9-12 से 9-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 9-36 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल

प्रौढ़ 10-00 से 10-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 10-24 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 11-36 तक

शून्य

2 घटी

बाल 10-48 से 11-00—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

युवा 11-00 से 11-12—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

प्रौढ़ 11-12 से 11-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

वृद्ध 11-24 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण
(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

11-36 से 2-00 तक

अमृत

2 घटी

बाल 11-36 से 11-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

युवा 11-48 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनु
(राहूकाल 10-30 से 12-00 तक)

प्रौढ़ 12-00 से 12-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ

वृद्ध 12-12 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अ

12-24 से 2-00 तक

वक्र

4 घटी

बाल 12-24 से 12-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 12-48 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्ब

प्रौढ़ 1-12 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण

वृद्ध 1-36 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

2-00 से 4-24 तक

अमृत

4घटी

बाल 2-00 से 2-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ

युवा 2-36 से 3-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अ

प्रौढ़ 3-12 से 3-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शु

वृद्ध 3-48 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए साधारणत

4-24 से 6-00 तक

महेन्द्र

4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए सामान्य

युवा 4-48 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफल

प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल

वृद्ध 5-36 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अ

शुक्रवार (रात्रि)

6-00 से 7-36 तक

वक्र

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकार

युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

7-36 से 8-24 तक

शून्य

2 घटी

बाल 7-36 से 7-48—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 7-48 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतादायक
प्रौढ़ 8-00 से 8-12—किसी भी कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 8-12 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

8-24 से 10-48 तक

अमृत

6 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-00 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-12 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 1-12 तक

शून्य

6 घटी

बाल 10-48 से 11-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 11-24 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए सफलतायुक्त
प्रौढ़ 12-00 से 12-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 12-36 से 1-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

1-12 से 2-00 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 1-12 से 1-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अनुकूल
युवा 1-24 से 1-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादायक
प्रौढ़ 1-36 से 1-48—किसी कार्य के लिए अनुकूल समय

वृद्ध 1-48 से 2-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

2-00 से 2-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 2-00 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 2-12 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 2-24 से 2-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 2-36 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-48 से 6-00 तक

वक्र

8 घटी

बाल 2-48 से 3-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 3-36 से 4-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 4-24 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 5-12 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

शनिवार (दिन)

6-00 से 7-36 तक

शून्य

4 घटी

बाल 6-00 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-24 से 6-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-48 से 7-12—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 7-12 से 7-36—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

7-36 से 9-12 तक

वक्र

4 घटी

बाल 7-36 से 8-00—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 8-00 से 8-24—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 8-24 से 8-48—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 8-48 से 9-12—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

9-12 से 10-48 तक

शून्य

4 घटी

बाल 9-12 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)
युवा 9-36 से 10-00—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)
प्रौढ़ 10-00 से 10-24—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)
वृद्ध 10-24 से 10-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण
(राहूकाल 9-00 से 10-30 तक)

10-48 से 2-00 तक

अमृत

8 घटी

बाल 10-48 से 11-36—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 11-36 से 12-24—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 12-24 से 1-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 1-12 से 2-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-00 से 2-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 2-00 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 2-12 से 2-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 2-24 से 2-36—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 2-36 से 2-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

2-48 से 4-24 तक

वक्र

4 घटी

बाल 2-48 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक

युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-24 से 5-12 तक

शून्य

2 घटी

बाल 4-24 से 4-36—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 4-36 से 4-48—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 4-48 से 5-00—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 5-00 से 5-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

5-12 से 6-00 तक

महेन्द्र

2 घटी

बाल 5-12 से 5-24—किसी भी कार्य के लिए सामान्यतः अ
युवा 5-24 से 5-36—प्रत्येक कार्य के लिए पूर्ण सफलतादाय
प्रौढ़ 5-36 से 5-48—किसी भी कार्य के लिए अनुकूल समय
वृद्ध 5-48 से 6-00—प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल

शनिवार (रात्रि)

6-00 से 6-48 तक

शून्य

2 घटी

बाल 6-00 से 6-12—किसी भी कार्य के लिए हानिकारक
युवा 6-12 से 6-24—किसी भी कार्य के लिए असफलतायुक्त
प्रौढ़ 6-24 से 6-36—प्रत्येक शुभ कार्य के लिए विपरीत
वृद्ध 6-36 से 6-48—प्रत्येक कार्य के लिए बाधापूर्ण

6-48 से 8-24 तक

वक्र

4 घटी

बाल 6-48 से 7-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 7-12 से 7-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयु

प्रौढ़ 7-36 से 8-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 8-00 से 8-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

8-12 से 10-48 तक

अमृत
4 घटी

बाल 8-24 से 9-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 9-00 से 9-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 9-36 से 10-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 10-12 से 10-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

10-48 से 12-24 तक

वक्र
4 घटी

बाल 10-48 से 11-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 11-12 से 11-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 11-36 से 12-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 12-00 से 12-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

12-24 से 2-48 तक

अमृत
6 घटी

बाल 12-24 से 1-00—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 1-00 से 1-36—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 1-36 से 2-12—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 2-12 से 2-48—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

2-48 से 4-42 तक

वक्र
4 घटी

बाल 2-48 से 3-12—प्रत्येक कार्य के लिए बाधाकारक
युवा 3-12 से 3-36—किसी भी कार्य के लिए पूर्ण विलम्बयुक्त
प्रौढ़ 3-36 से 4-00—किसी भी कार्य के लिए कठिनाईपूर्ण
वृद्ध 4-00 से 4-24—प्रत्येक कार्य के लिए विपरीत

4-48 से 6-00 तक

अमृत
4 घटी

बाल 4-24 से 4-48—प्रत्येक कार्य के लिए शुभ
युवा 4-48 से 5-12—किसी भी कार्य के लिए शुभ व अनुकूल
प्रौढ़ 5-12 से 5-36—किसी भी कार्य के लिए सामान्य शुभ
वृद्ध 5-36 से 6-00—किसी भी कार्य के लिए साधारणतः अनुकूल

पीछे के पृष्ठों में काल ज्ञान दिया है और रात-दिन के चौबीस घंटों को विभिन्न फलदायक कालों में विभाजित किया गया है, इन कालों में महेन्द्रकाल, अमृतकाल, वक्रकाल एवं शून्यकाल प्रमुख हैं।

महर्षियों ने इस काल को भी सूक्ष्म विवेचन कर पांच-पांच मिनट के अन्तर के फल को भी स्पष्ट कर दिया है, यद्यपि यह सूक्ष्म काल विवेचन अभी तक पूर्णतः गोपनीय रहा, परन्तु मैं आगे के पृष्ठों में पाठकों के ज्ञानहितार्थ इस सूक्ष्म विवेचन को भी स्पष्ट कर रहा हूं।

महर्षियों ने इस सूक्ष्म विवेचन को एक घण्टे के क्रम से रखा है, इसके बाद वही क्रम पुनः आरम्भ हो जाता है। उदाहरण से यह तथ्य ज्यादा स्पष्ट हो सकेगा।

उदाहरणार्थ चैत मास में रविवार के दिन प्रायः 6 बजकर 48 मिनट से 10 बजे तक अमृतकाल का समय कहा जाता है जो कि 3 घण्टे बारह मिनट का है।

इसका सूक्ष्म विवेचन करते हैं, तो चैत मास में अमृतकाल का सूक्ष्म विवेचन देखा (ध्यान रहे सूक्ष्म विवेचन में वार का महत्त्व नहीं होता, चाहे सोमवार हो, रविवार हो या शनिवार हो, (कोई फर्क नहीं पड़ता) तो सूक्ष्म विवेचन इस प्रकार बना—

6-48 से 6-53 तक (पांच मिनट) यात्रा, महत्वपूर्ण कार्य आदि फल !
6-53 से 6-58 तक (")
6-58 से 7-03 तक (")
7-03 से 7-08 तक (")

इसी प्रकार एक घण्टा पूर्ण होने पर यही क्रम और फल वापिस प्रारम्भ हो जाएगा, अर्थात् 6-48 से 6-53 तक का जो फल है वहीं 7-48 से 7-53 तक का भी फल होगा।

इस सूक्ष्म विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सूक्ष्म समय किस प्रकार के कार्य के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

यह जो भी समय होता है, यात्रा या व्यापार के आदि को प्रारम्भ करने का माना जाना चाहिए, प्रारम्भ करने के बाद उसमें चाहे कितना भी समय लगे, उस पर विचार करना जरूरी नहीं होता।

प्रत्येक सूक्ष्म समय का प्रधान देवता तथा भक्ष्य भी दिया है, उस समय में उस देवता का स्मरण कर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए, तथा सम्बन्धित वस्तु थोड़ी-सी खाकर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए, तथा सम्बन्धित वस्तु थोड़ी-सी खाकर कार्य या यात्रा प्रारम्भ की जानी चाहिए जिससे अनुकूलता रहती है, तथा बाधाओं की निवृत्ति हो जाती है।

उदाहरण के लिए ऊपर के उदाहरण में 6-48 से 6-53 के समय के अधिष्ठाता देवता 'रुद्र' माने गए हैं, अतः इनका स्मरण करना शुभ रहता है, तथा इस समय में यात्रा या महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व थोड़ा-सा गुड़ खा लिया जाय तो विशेष शुभ रहता है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों में भी समझना चाहिए।

अब आगे के पृष्ठों में सूक्ष्म काल विवरण दे रहा हूं।

●●●

चैत्र मास

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : शुभ कार्य के एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल हैं इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'बाह्य' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा, मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कार्तवीर्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' है, शहद भक्षण

कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार, कार्य मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के अधिष्ठाता 'मरुत' है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता सूर्य हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय, प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं। ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

बैसाख मास

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय, प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं,

ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

6 से 10 मिनट तक : किसी भी व्यापार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' हैं, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता सूर्य हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार, कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के अधिष्ठाता 'मरुत' हैं, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कार्तवीर्यार्जुन हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी

विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'बाह्य' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल हैं इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

ज्येष्ठ

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल हैं इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का

अधिष्ठाता 'बाह्य' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

16 से 20 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कार्तवीर्यार्जुन हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मिलन उन्नति कार्य आदि के लिए यह समय उचित माना गया है। इस समय के अधिष्ठाता 'मरुत' है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रणय, लाभ कार्य, खेल-यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यय कार्य, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है। इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ

है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता सूर्य हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

आषाढ़

1 से 5 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् हैं, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा, मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कार्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता सूर्य हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

41 से 45 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम है ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दुग्ध भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है, इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

श्रावण

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

5 से 10 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय-प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं, ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

21 से 25 मिनट तक : उन्नति विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य

आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, विजय, कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता विष्णु है, चावल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है, इस समय देवता 'लक्ष्मी' है दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

51 से 55 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल हैं इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

भाद्रपद

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय की देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा, मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

16 से 20 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय-प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ

कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिगा खाना अनुकूल रहता है।

51 से 55 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाय, तो विशेष शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

आश्विन

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्व है, इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा

चर्वण शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय-प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

31 से 35 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

36 से 40 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

41 से 45 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

51 से 55 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है। इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

कार्तिक

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

6 से 10 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

11 से 15 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का

चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

26 से 30 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना

चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

मार्ग शीर्ष

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय-प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, द्युत आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है,

दधि भक्षण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्त्व है इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

36 से 40 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

51 से 55 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

पौष

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्त्व है इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा

मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : किसी भी व्यापार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

41 से 45 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

56 से 60 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

माघ

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

6 से 10 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्त्व है इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अतः गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा चर्वण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य, व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ

माना जाता है।

36 से 40 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय के अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् है, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय-प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम हैं ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

फाल्गुन

महेन्द्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा की दृष्टि से इस समय का विशेष महत्त्व है इस समय का अधिष्ठाता 'गणेश' है, अत: गणेश का स्मरण कर, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए, दूर्वा

चर्वण शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, द्युत कार्य, हानि लाभ, सट्टा, भाग्य परीक्षा मित्रता, लाभदायक कार्य आदि के लिए यह समय उचित है, इस समय के स्वामी 'कीर्तवीर्यार्जुन है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, शुभ कार्य, सगाई, विवाह, मांगलिक कार्य व्यापारिक कार्य, द्युत आदि के लिए समय शुभ है, इस समय के देवता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : व्यापार कार्य के लिए इस समय का चुनाव विशेष शुभ है। इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता है।

21 से 25 मिनट तक : उन्नति कार्य, विवाह, प्रणय, प्रेमप्रदर्शन, लाभ कार्य, खेल, यात्रा आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ किया जाए, तो विशेष शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : किसी भी प्रकार की उन्नति, व्यापार, नौकरी, यात्रा आदि के लिए इस समय का चुनाव करना शुभ माना गया है इस समय की देवता 'गौरी' है, हरिद्रा भक्षण शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, विजय कार्य, धन संग्रह, खरीददारी व शुभ कार्य के लिए यह समय अनुकूल है, इस समय का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' है, ताम्बूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, विवाह, व्यापार कार्य, मित्रता, उन्नति कार्य आदि के लिए इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए, इस समय के अधिष्ठाता मरुत् हैं, तिल भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : व्यापार, सफलता, शिक्षा, खेल, प्रणय, प्रसंग, विवाह, यात्रा आदि के लिए इसी समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के देवता गौतम है ताम्बुल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

46 से 50 मिनट तक : शुभ कार्य एवं व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है इस काल का स्वामी 'शिव' है, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व धनिया खाना अनुकूल रहता है।

51 से 55 मिनट तक : भाग्योदय, चुनाव, परीक्षा देना, सफलता सम्बन्धी कार्य, स्थिर कार्य, भाग्योदय हेतु इस समय का चुनाव किया जाना चाहिए। इस समय के स्वामी विष्णु हैं, चावल खाकर कार्य करना विशेष शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार की यात्रा एवं सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ एवं अनुकूल है, इस समय के देवता 'सूर्य' हैं। शर्करा भक्षण कर यात्रा या कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

चैत्र

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा महत्वपूर्ण व उन्नति के कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इण्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ रहता है।

11. से 15 मिनट तक : घृत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि हैं, तिल

भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसका देवता 'विष्णु' है चीनी भक्षण शुभ है।

31 से 35 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह'है, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

36 से 40 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'शिव' है, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : विवाह, सगाई आदि के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजो, आदि के लिए यह शुभ समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

51 से 55 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार, उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह शुभ समय है, इसके अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दुर्वा भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा, व्यापार उन्नति के कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

बैसाख

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति के कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' है, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार, उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह शुभ समय है, इसके अधिष्ठाता देव 'गौरी' है दुर्वा भक्षण शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : विवाह, सगाई आदि के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह शुभ समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

16 से 20 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

21 से 25 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'शिव' है, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय

है, इसके देवता 'विष्णु' है, चीनी भक्षण शुभ है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इण्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति के कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

ज्येष्ठ

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसका देवता 'विष्णु' है चीनी भक्षण शुभ है।

11 से 15 मिनट तक : किसी भी व्यापार कार्य के लिए यह शुभ समय है,

इसके देवता 'नृपसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ होगा।

16 से 20 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति के कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इण्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति के कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' है, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार, उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह शुभ समय है, इसके अधिष्ठाता देव

'गौरी' है दुर्वा भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : विवाह, सगाई आदि के लिए प्रस्थान इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह शुभ समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' है, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

आषाढ़

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' है, दधि भक्षण शुभ रहता है।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, आदि के लिए समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनी' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यो के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' है, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

26 से 30 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान

या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं। चीनी भक्षण शुभ है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रादि के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : स्थाई कार्य एवं व्यापार, उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह शुभ समय है। इसके अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दुर्वा भक्षण शुभ रहता है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यो के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : विवाह सगाई आदि के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

श्रावण

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है इस समय के देवता 'रुद्र' हैं,

कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

31 से 35 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ हैं।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा, व्यापार उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों

के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

भाद्रपद

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, इसके अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ,, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

31 से 35 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समस के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : यह किसी भी प्रकार के कार्य के लिए शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' है, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ है।

56 से 60 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

अश्विन

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान

या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ हैं।

11 से 15 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, इस समस के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यो के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव

'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : विवाह, सगाई आदि के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

56 से 60 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

कार्तिक

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' है, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यो के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

51 से 55 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति के कार्यो के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

मार्गशीर्ष

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' है, तिल

भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समस के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार, उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यो

के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

पौष

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ हैं।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ,, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

16 से 20 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

21 से 25 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता

'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

41 से 45 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

46 से 50 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' है, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

माघ

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, व्यवसाय के लिए यात्रा, यज्ञ, पूजन, अनुष्ठान आदि के लिए यह समय शुभ है। इस समय के देवता 'शिव' हैं, चावल का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त समय है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'सरस्वती' है, मूँग के दाने चबाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं दधि भक्षण शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : किसी भी प्रकार के कार्य के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'नृसिंह' हैं, लड्डू का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' है, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान

या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा, व्यापार उन्नति के कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

फाल्गुन

अमृत काल

1 से 5 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान, इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा, व्यापार, उन्नति कार्य एवं समस्त शुभ कार्यो के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं, पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

15 से 20 मिनट तक : यात्रा, महत्वपूर्ण व उन्नति कार्यों के लिए इस समय का चुनाव शुभ है इस समय के देवता 'रुद्र' हैं, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गुड़ का प्रयोग शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : यात्रा, स्थायित्व सम्बन्धी कार्य, व्यापार प्रारम्भ,, मुहूर्त आदि के लिए इस समय का चुनाव शुभ है, इस समय के देवता 'लक्ष्मी' हैं, दुग्ध प्रसाद भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार, यात्रा आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, इस समय के देव 'शनि' हैं, तिल भक्षण करके कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना जाता है।

31 से 35 मिनट तक : परीक्षा, चुनाव, इन्टरव्यू, ज्योईनिंग तथा यात्रादि के लिए समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता 'चन्द्र' हैं, दधि भक्षण शुभ रहता है।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य, व्यापार प्रारम्भ करना, किसी भी मकान या दुकान का मुहूर्त आदि के लिए यह शुभ समय है, इसके देवता 'विष्णु' हैं, चीनी भक्षण शुभ है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा के लिए यह समय शुभ है, इस समय के देवता 'गणपति' हैं, गुड़ का प्रयोग कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : स्थाई कार्य एवं समस्त शुभ कार्यों के लिए यह समय उपयुक्त है, इसके प्रधान देव 'विष्णु' हैं पकवान भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : स्थायी कार्य एवं व्यापार उन्नति तथा यात्रादि के लिए यह समय शुभ है, अधिष्ठाता देव 'गौरी' है, दूर्वा भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : विवाह, सगाई के लिए प्रस्थान. इन्टरव्यू, मुकदमेबाजी, आदि के लिए यह समय शुभ है, इस समय के अधिष्ठाता देव 'हनुमान' हैं, गुड़ का भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करना शुभ है।

चैत्र

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है, प्रारंभ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है, हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें तो शुभ रहेगा।

6 से 10 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

11 से 15 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त । प्रधान देव 'वरुण' है। दधि भक्षण कर यात्रा करें।

16 से 20 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

21 से 25 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञान करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव, 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

26 से 30 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' हैं, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा के लिए शुभ हैं, इसके प्रधान देव 'गणपति' हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

41 से 45 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए यह उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं, पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार आदि कार्यों के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना

गया है।

51 से 55 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ माना है।

56 से 60 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

बैशाख

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

6 से 10 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है, प्रारंभ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है, हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें तो शुभ रहेगा।

11 से 15 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

16 से 20 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त । प्रधान देव 'वरुण' है। दधि भक्षण कर यात्रा करें।

21 से 25 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' हैं, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

26 से 30 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव, 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

31 से 35 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

36 से 40 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान

देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : व्यापारिक कार्यों के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए यह उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं, पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

51 से 55 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ माना है।

ज्येष्ठ

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ माना है।

6 से 10 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए यह उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं, पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

16 से 20 मिनट तक : व्यापार आदि कार्यों के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना है।

26 से 30 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान

देव, 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

36 से 40 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' हैं, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

41 से 45 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त । प्रधान देव 'वरुण' है। दधि भक्षण कर यात्रा करें।

46 से 50 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है, प्रारंभ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है, हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारंम्भ करें तो शुभ रहेगा।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

आषाढ़

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह अनुकूल है, 'वरुत्' इसके देव है, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

6 से 10 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव, 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

11 से 15 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' हैं, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

16 से 20 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त । इसके प्रधान देव

'वरुण' हैं। दधि भक्षण कर यात्रा करें।

21 से 25 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

26 से 30 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है, प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है, हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

36 से 40 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण कर शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

46 से 50 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए यह उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं, पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

51 से 55 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ माना है।

श्रावण

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है, प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है, हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें।

5 से 10 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का

चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

11 से 15 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त । प्रधान देव 'वरुण' है। दधि भक्षण कर यात्रा करें।

16 से 20 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' हैं, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

21 से 25 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव, 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

26 से 30 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव है, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ माना है।

36 से 40 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

41 से 45 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण कर शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार आदि कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए यह उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुकाचार्य' हैं, पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

भाद्रपद

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रादि के लिए विशेष अनुकूल, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

6 से 10 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' है। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

11 से 15 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

16 से 20 मिनट तक : व्यापारिक कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : व्यापार व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : व्यापारिक कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

36 से 40 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

41 से 45 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने के अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

46 से 50 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त, प्रधान देव 'वरुण' है दधि भक्षण कर यात्रा करें।

51 से 55 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का

चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें ।

56 से 60 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कार्य प्रारम्भ करें।

अश्विन

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक रहता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें ।

6 से 10 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव है, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

11 से 15 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ माना गया है।

16 से 20 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त। प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

21 से 25 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

26 से 30 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

36 से 40 मिनट तक : व्यापारिक कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव

'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रादि के लिए विशेष अनुकूल, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

कार्तिक

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त, प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

6 से 10 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने, अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

11 से 15 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय है इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

16 से 20 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

21 से 25 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

26 से 30 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

31 से 35 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ रहेगा।

36 से 40 मिनट तक : व्यापार, व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

41 से 45 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

51 से 55 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक होता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

56 से 60 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

मार्गशीर्ष

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

6 से 10 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक होता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर जावें।

11 से 15 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने के अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

16 से 20 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्'

इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

21 से 25 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

26 से 30 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

31 से 35 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ रहेगा।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त। प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

41 से 45 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है चावल भक्षण कर जावें।

46 से 50 मिनट तक : व्यापार व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है , प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

पौष

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ रहेगा।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त। प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

11 से 15 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

16 से 20 मिनट तक : व्यापार व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

21 से 25 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

26 से 30 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है , प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

36 से 40 मिनट तक : प्रेम प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक होता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

41 से 45 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने के अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

46 से 50 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

51 से 55 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए समय शुभ है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

माघ

वक्र काल

1 से 5 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

6 से 10 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए समय शुभ है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

11 से 15 मिनट तक : प्रेम, प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक होता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' है, शहद भक्षण कर जावें।

16 से 20 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

21 से 25 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

26 से 30 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त। प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

31 से 35 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

36 से 40 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

41 से 45 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'गरुड़' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ रहेगा।

46 से 50 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें

तो उत्तम रहता है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल, प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है, प्रधान देव 'गणपति' है, गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

फाल्गुन

वक्र का

1 से 5 मिनट तक : मित्रता बढ़ाने के अधिकार प्राप्त करने, स्थानान्तरण आदि के लिए यह समय उपयुक्त है, प्रधान देव 'सूर्य' है, जीरा प्रयोग करें तो विशेष अनुकूल रहेगा।

6 से 10 मिनट तक : प्रेम, वाद्य, द्युत आदि के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'पुष्पधन्वा' है, शहद भक्षण शुभ रहता है।

11 से 15 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए उपयुक्त। प्रधान देव 'वरुण' है, दधि भक्षण कर यात्रा करें।

16 से 20 मिनट तक : जुआ, रेस, सिनेमा, व्यापार आदि के लिए उपयुक्त समय है, इसके प्रधान देव 'शुक्राचार्य' हैं। पकवान खाकर कार्य प्रारम्भ करना शुभ रहेगा।

21 से 25 मिनट तक : प्रेम, प्रदर्शन, प्रणय आदि के लिए इस समय का चुनाव ठीक होता है, इस समय के प्रधान देव 'कामदेव' हैं, शहद भक्षण कर जावें।

26 से 30 मिनट तक : यात्रादि के लिए यह समय अनुकूल है, 'मरुत्' इसके देव हैं, गुड़ खाकर जाना ठीक रहेगा।

31 से 35 मिनट तक : यात्रा के लिए कुछ बाधाकारक पर अन्त में ठीक। प्रधान देव 'अग्नि' है, सरसों चर्बण कर कार्य करें तो उत्तम रहता है।

36 से 40 मिनट तक : व्यापार आदि के लिए अपेक्षाकृत ठीक है। प्रारम्भ में विलम्ब व बाद में सिद्धि। प्रधान देव 'मरुत्' है। हरिद्रा भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ रहेगा।

41 से 45 मिनट तक : जासूसी, भेद ज्ञात करना, सामने वाले को प्रभावित करना, आदि के लिए यह समय ठीक है, प्रधान देव 'वात' है, चावल भक्षण कर जावें।

46 से 50 मिनट तक : व्यापारादि कार्यों के लिए यह शुभ समय है, प्रधान देव 'गुरु' है, बेसन का प्रयोग शुभ माना गया है।

51 से 55 मिनट तक : व्यापार व्यवसाय के लिए सामान्य अनुकूल है। इसके प्रधान देव 'चन्द्रमा' है, दधि भक्षण शुभ माना गया है।

56 से 60 मिनट तक : यात्रा आदि के लिए विशेष अनुकूल है इसके प्रधान देव 'गणपति' हैं। गुड़ का प्रयोग शुभ रहेगा।

चैत्र

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी गणपति का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

6 से 10 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण, अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करते हैं अनुकम्पा।

11 से 15 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां पर बाद में स्थिति में सुधार। प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

21 से 25 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है। गुड़ घी खाकर जावें तो

26 से 30 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण कर जावें।

31 से 35 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय, शुभ कार्यों में बर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

36 से 40 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौंन्दर्य प्रसाधन सामग्री, विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़, घी भक्षण शुभ।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ, प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज', सरसों का चर्बण शुभ।

51 से 55 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा' घृत भक्षण शुभ।

56 से 60 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल, प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

बैशाख

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल, प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

6 से 10 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा' घृत भक्षण शुभ।

11 से 15 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ, प्रधान देवता 'लक्ष्मी'।

चावल भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौंन्दर्य प्रसाधन सामग्री, विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़, घी भक्षण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय, शुभ कार्यों में बर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

31 से 35 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण कर जावें।

36 से 40 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है। गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

41 से 45 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

46 से 50 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां पर बाद में स्थिति में सुधार। प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

51 से 55 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण, अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

56 से 60 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण, फिर भी गणपति का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

ज्येष्ठ

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है। गुड़ घी खाकर जावें तो

अनुकूल।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

11 से 15 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां पर बाद में स्थिति में सुधार। प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण, अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

21 से 25 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं पेरशानीपूर्ण फिर भी गणपति का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

26 से 30 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल, प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा' घृत भक्षण शुभ।

36 से 40 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ, प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

46 से 50 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौंन्दर्य प्रसाधन सामग्री, विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़, घी भक्षण शुभ।

51 से 55 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय, शुभ कार्यों में बर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

56 से 60 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण कर जावें।

आषाढ़

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय, शुभ कार्यों में बर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

6 से 10 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल, प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

11 से 15 मिनट तक : द्युत, कार्य, मद्य, घुड़दौड़, सौंन्दर्य प्रसाधन विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देव 'विश्वकर्मा'। गुड़, घी भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक प्रधान देव 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रणय प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल, प्रधान देवता 'शुक्राचार्य' फल भक्षण करके जावें।

36 से 40 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर प्रारम्भ करें तो शुभ।

41 से 45 मिनट तक : बाधाकारक समय पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है। गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

51 से 55 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

56 से 60 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ, इस समय का देवता 'काल' है, शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

श्रावण

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

6 से 10 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक प्रधान देव 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

11 से 15 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ, इस समय का देवता 'काल' है, शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

26 से 30 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

36 से 40 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षणं शुभ।

41 से 45 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

46 से 50 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करे तो कुछ अनुकूल।

51 से 55 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

56 से 60 मिनट तक : अनुकूल, शुभ यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा' दधि भक्षण शुभ।

भाद्रपद

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

6 से 10 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

11 से 15 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक प्रधान देव 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

31 से 35 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

36 से 40 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करे तो कुछ अनुकूल।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-कारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

51 से 55 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ, इस समय का देवता 'काल' है, शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

56 से 60 मिनट तक : अनुकूल, शुभ यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा' दधि भक्षण शुभ।

अश्विन

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ, इस समय का देवता 'काल' है, शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

6 से 10 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़ सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षण शुभ।

11 से 15 मिनट तक : अनुकूल, शुभ यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

26 से 30 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-कारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

36 से 40 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-कारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानी पूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूल।

51 से 55 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्य में वर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

56 से 60 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

कार्तिक

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

6 से 10 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

11 से 15 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधाकारक पर बाद में शुभ प्रधान। देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

16 से 20 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा' दधि भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

26 से 30 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज' सरसों का चर्बण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं पेरशानीपूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

36 से 40 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी'। दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

51 से 55 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

56 से 60 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षण शुभ।

मार्गशीर्ष

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

6 से 10 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

11 से 15 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

16 से 20 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा' दधि भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी 'गणपति' का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

36 से 40 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

41 से 45 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

46 से 50 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

51 से 55 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-

कारक पर बाद में शुभ प्रधान। देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

56 से 60 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक प्रधान देवता 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

पौष

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

6 से 10 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

11 से 15 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

16 से 20 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ घी भक्षण शुभ।

21 से 25 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ। घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

36 से 40 मिनट तक : प्रत्येक कार्य व यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-कारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी'। चावल भक्षण शुभ।

41 से 45 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर

भी गणपति का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

46 से 50 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

51 से 55 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारम्भ करें तो कुछ अनुकूल।

56 से 60 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक। प्रधान देवता 'हिडिम्बा'। घृत शुभ।

माघ

शून्य काल

1 से 5 मिनट तक : कार्य के प्रारम्भ में परेशानियां, पर बाद में स्थिति में सुधार, प्रधान देव 'अग्नि'। तिल भक्षण शुभ।

6 से 10 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं परेशानीपूर्ण फिर भी गणपति का स्मरण कर व गुड़ खाकर कार्य प्रारम्भ करें तो शुभ।

11 से 15 मिनट तक : बाधाकारक समय, पर मुकदमेबाजी आदि के लिए शुभ। देवता 'हनुमान' है, गुड़ घी खाकर जावें तो अनुकूल।

16 से 20 मिनट तक : यात्रादि के लिए विपरीत समय। शुभ कार्यों में वर्जित। प्रधान देवता 'चित्रगुप्त'। फूल भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें तो कुछ अनुकूल।

21 से 25 मिनट तक : प्रत्येक कार्य या यात्रादि के लिए प्रारम्भ में बाधा-कारक पर बाद में शुभ। प्रधान देवता 'लक्ष्मी' चावल भक्षण शुभ।

26 से 30 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए अशुभ एवं बाधाकारक प्रधान देवता 'हिडिम्बा'। घृत भक्षण शुभ।

31 से 35 मिनट तक : प्रत्येक कार्य में व्यवधानपूर्ण। अधिष्ठाता देवता 'गौरी' है, दधि भक्षण कर कार्य प्रारम्भ से कुछ अनुकूलता।

36 से 40 मिनट तक : द्युत कार्य के लिए शुभ। इस समय का देवता 'काल' है। शहद भक्षण कर जावें तो अनुकूल।

41 से 45 मिनट तक : प्रणय-प्रसंग, मद्यपान, जुआ, घुड़दौड़ आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'शुक्राचार्य'। फल भक्षण करके जावें।

46 से 50 मिनट तक : द्युत, मद्य, घुड़दौड़, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, विक्रय व्यापार आदि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'विश्वकर्मा'। गुड़ भक्षण शुभ।

51 से 55 मिनट तक : प्रत्येक कार्य के लिए सामान्य अनुकूल। प्रधान देवता 'मकरध्वज'। सरसों का चर्बण शुभ।

56 से 60 मिनट तक : अनुकूल, शुभ, यात्रादि के लिए अनुकूल। प्रधान देवता 'ब्रह्मा'। दधि भक्षण शुभ।

●●●

स्त्री और पुरुष की अलग-अलग विवेचना।
काल निर्णय आप के लिए प्रकाशित है।
काल-निर्णय उनके लिए है जो ज्योतिषी हैं।
काल-निर्णय उनके लिए है जो ज्योतिष के प्रेमी हैं।
बारह महीनों नौ ग्रह योगों का सूक्ष्म विवेचनात्मक विवरण
रात और दिन गरीबी और अमीरी का भाग्य-निर्णय विवरण
साधना पॉकेट बुक्स